सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

श्री सुरेश 'भय्या' जोशी

माननीय सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

इन्दौर, 14 अगस्त 2017

इन्दौर नगर के सज्जन वृंद, बहनों एवं भाईयों।
मैं आपके सामने कुछ विषय रखने के लिए खड़ा हूँ।

पं. दीनदयाल जी उपाध्याय और नानाजी देशमुख इन दोनों महापुरूषों का ये जन्म शताब्दी वर्ष है। संयोग है कि एक ही समय में इन दोनों महापुरूषों ने इस पुण्य भूमि पर जन्म लिया और इनके सानिध्य में हम सबको रहने का कुछ अवसर प्राप्त हुआ, यह अपना भाग्य है। एक महापुरूष के बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने गहराई से अध्ययन, चिन्तन किया और विश्व के सामने एकात्म मानवदर्शन के रूप में अपने भारत के चिन्तन की प्रस्तुति की और दूसरे महापुरूष ऐसे हैं कि जिन्होंने उस चिन्तन को समझकर, जमीन पर उतारने का प्रयास किया। इसलिए इन दोनों महापुरूषों के चरणों में विनम्रता से प्रणाम करते हुए उनको मैं मेरी सुमनांजलि प्रस्तुत करता हूँ।

आज हम 14 अगस्त स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर यहाँ पर एकत्रित हैं। 70 वर्ष पूरे हो हुए हैं। 71वां स्वतंत्रता दिवस कल हम मनायेंगे। और इसलिए स्वभाविक रूप से इस स्वतंत्र देश में हमको जीने के अवसर प्राप्त हैं। यह हम सबका भाग्य है, इसका हम सबको आनन्द है। और इसलिए इस पर्व पर आप सबको अभिनन्दन करते हुये, आप सबका अभिवादन करते हुए मैं कुछ बातें कहूंगा। 70 वर्ष पूर्व देश का अपना एक संविधान के आधार पर अपना राज्य शुरू हुआ। लेकिन बहुत कुछ सोचने के, चिन्तन के विषय हैं। मन में प्रश्न आता है कि 15 अगस्त 1947 को जो हुआ क्या वह ठीक हुआ? क्या हमारे पूर्वजों की आकांक्षाओं के अनुरूप हुआ? गुलामी से मुक्त हुआ भारत देखने का आनन्द तो है लेकिन एक वेदना भी हम सबके अन्त:करण में है। इसके साथ मजहब के आधार पर इस देश का दो टुकड़ों में बाँटा गया। तब प्रश्न आता है कि क्या हम वास्तविक रूप से स्वतंत्र हुए हैं? 14 अगस्त को जो अपने आपको भारत का